दसन दमक फैलि हियें मोति-माल होति,

पिय सों लड़कि प्रेम-पगी बतरानि मैं।

आनंद की निधि जगमगाति छबीली बाल,

अंगनि अनंग रंग ढुरि मुरि जानि मैं॥

5. 'पृथ्वीरास रासो' की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

6. भूषण के काव्य में अभिव्यक्त राष्ट्रीय चेतना पर प्रकाश डालिए।

7. "तुलसीदास एक समन्वयवादी भक्त कवि थे।" सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

8. निर्गुण भक्ति काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

9. नागमति के विरह वर्णन की विशेषताएँ लिखिए।

MAHD–01

December – Examination 2021

M.A. (Previous) Examination

HINDI

प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

Paper : MAHD-01

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **80***

निर्देश :- यह प्रश्न-पत्र 'अ' और 'ब' दो खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड—अ **4×4=16**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार एक शब्द, एक वाक्य या अधिकतम **30** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 4 अंकों का है।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

   (i) कबीर की भाषा कौनसी है एवं उसकी क्या विशेषता है ?

(ii) 'आयो घोष बड़ो व्यापारी' पंक्ति किस कवि की है ?

(iii) 'कीर्तिलता' और 'कीर्तिपताका' के रचनाकार का नाम लिखिए।

(iv) 'अखरावट' और 'आखिरी कलाम' किसके द्वारा लिखे गये हैं ?

(v) 'अब लौं नसानी अब न नसैहों' पंक्ति किस महाकवि की है और किस रचना से ली गयी है ?

(vi) मीरां की भक्ति किस प्रकार की है ?

(vii) 'अति सूधो सनेह को मारग है' पंक्ति किस कवि की है ?

(viii) कवि बिहारी का सम्बन्ध किस राजदरबार से था ?

खण्ड—ब **4×16=64**

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **200** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 16 अंकों का है।

2. निम्नलिखित पद्य-खण्ड की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

नव वृन्दावन नव नव तरुगन, नव नव विकसित फूल।
नवल वसंत नवल मलयानिल, मातल न अलि धूल॥
बिहरए नवल किसोर।

कालिन्दि-पुलिन कुंज वन सोभन, नव नव प्रेम विभोर॥
नवल रसाल मुकुल-मधु मातल, नव कोकिल कुल गाव।
नव युवती गनचित उमताबए, नव रस कानन धाब॥
नव युवराज नवल बर नागरि, मीलए नव नव भाँति।
नित नित ऐसन नव नव खेलन, विद्यापति मति माति॥

3. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

पीछे लागा जाए था, लोक वेद के साथि।
आगे थे सतगुरु मिल्या, दीपक दिया हाथि॥
दीपक दिया तेल भरि, बाती दई अघट्ट।
पूरा किया बिसाहुणा, बहुरि न आवौं हट्ट॥
कबीर गुरु ग्एवा मिल्या, रलि गया आटे लूँण।
जाति-पाँति कुल सब मिटै, नींव धरोगे कूँण॥

4. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

लाजनि लपेरी चितवनि भेद-भाय भरी,
लसति ललित लोल-चख तिरछानि मैं।
छवि को सदन गोरो बदन रुचिर भाल,
रस निचुरत मीठी मृदु मुसक्यानि मैं।